

चिरौंजी की बागवानी

नंदकिशोर ठोंबरे*, लोकेश मीना* और निरंजन प्रसाद*

चिरौंजी बीज का उपयोग भारत में सूखे मेवे के रूप में प्रचलित है। यह सभी प्रकार के मिष्ठान, पकवान आदि में प्रयोग किया जाता है। इस मूल्यवान मेवे की कीमत लगभग 1000 रुपए/किलोग्राम तक होती है। इसीलिए वनाश्रित लोगों के लिए जंगलों से इसका फल एकत्रित कर इसको बाजार में बेचना, आजीविका चलाने का महत्वपूर्ण विकल्प है। असीमित गुणवत्ता तथा उच्च बाजार मूल्य होने के बाद भी यह पेड़ केवल जंगल तक ही सीमित रह गया है। इसीलिए चिरौंजी के पेड़ को बागवानी में लाने की प्रचुर संभावनाएँ हैं, जिससे अधिक से अधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें।

चिरौंजी का पेड़ प्रायः जंगल में पाए जाने के कारण इसका संग्रहण, उत्पादन एवं व्यापार केवल स्थानीय लोगों तक ही सीमित रह गया है। इस पेड़ की व्यावसायिक क्षमता को ध्यान में रखते हुए, इसको जंगलों तक सीमित न रखते हुए, इसके उत्पादन को बढ़ाने के लिए इसे बागवानी में लाना होगा। चिरौंजी की व्यावसायिक बागवानी करने से किसान लाभान्वित हो सकते हैं। व्यावसायिक बागवानी में लाने से चिरौंजी के उत्पादन में वृद्धि होगी, जिससे इसका निर्यात भी किया जा सकता है। किसान इसकी बागवानी करके अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं और जीवनस्तर सुधार सकते हैं।

वितरण एवं संरचना

चिरौंजी का वृक्ष मुख्यतः सूखे पर्वतीय प्रदेशों के जंगलों में मिलता है। जैसे-पूर्वी-घाट, पश्चिमी-घाट, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश, मध्यप्रदेश, छोटा नागपुर, आदि। प्राकृतिक रूप से सभी क्षेत्रों में पाए जाने के कारण इसकी बागवानी की संभावनाएँ लगभग



देश में चिरौंजी का उत्पादन

*भाकृअनुप-भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची, झारखंड



चिरौंजी का पेड़



पत्ते तथा छाल



चिरौंजी के फूल

सभी राज्यों में बहुत अधिक हैं। चिरौंजी एक सदाबहार वृक्ष है। इसकी ऊँचाई 15 से 25 फीट के आसपास होती है। इसकी छाल बहुत ही मोटी और खुरदरी (मगरमच्छ की पीठ) जैसी होती है। इसकी पत्तियाँ 15-20 सें.मी. लम्बी एवं गोल आकार में जालीदार सिरे युक्त होती हैं। इसके फल 8-12 मि.मी. के, अंडाकार और गोलाकार होते हैं। इस वृक्ष के फल से प्राप्त गुठली को फोड़कर चिरौंजी निकाली जाती है।

फायदे और उपयोग

चिरौंजी में प्रचुर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इसके सेवन से शरीर में प्रोटीन की

कमी पूरी की जा सकती है। इसे मिठाई में, सूखे मेवे के रूप में प्रयोग किया जाता है। शारीरिक कमजोरी के लिए चिरौंजी खाना बहुत फायदेमंद होता है। यह शारीरिक क्षमता का विकास भी करता है। इसे दूध के साथ पकाकर सेवन करने से सर्दी-जुकाम में फायदा होता है। इसका सौंदर्य उत्पाद में इस्तेमाल करने से चेहरे पर चमक आती है और कील-मुहांसे, दाग आदि साफ हो जाते हैं। आयुर्वेद में चिरौंजी का फल मधुर, अम्ल तथा कफ-पित्तशामक माना गया है। इसका तेल पित्तविकारों में हितकारी होता है। चिरौंजी के पेड़ से निकलने वाले गोंद का प्रयोग चर्म



चिरौंजी फल



चिरौंजी गोंद



चिरौंजी दाना

चिरौंजी के व्यावसायिक उत्पाद



चिरौंजी के फल बेचती महिला

रोग की औषधि में होता है एवं पेय पदार्थ में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

बागवानी की संभावनाएं

चिरौंजी की बागवानी की विशेषता यह है कि जंगली पौधा होने के कारण इसे पानी की ज्यादा आवश्यकता नहीं होती तथा जानवर भी इसे नहीं खाते हैं। अनुपजाऊ तथा पथरीली जमीन पर भी इसे आसानी से उगाया जा सकता है, साथ ही साथ इसमें कीट-रोग आदि की समस्या नहीं होती। यह पेड़ अधिकांश जंगली क्षेत्रों में मिलता है, लेकिन उपयोगिता के हिसाब से इस पेड़ की बागवानी या खेती करने से कम संसाधनों में भी यह किसान को बहुत अच्छा आर्थिक लाभ दे सकता है। इससे प्राप्त होने वाले उत्पादों की कीमत बाजार में बहुमूल्य है। इसकी खेती बड़े स्तर पर करने से किसान इससे लाभान्वित हो सकते हैं, साथ ही साथ छोटे किसान या जिनके पास जमीन कम है वे इस पेड़ को अपने खेत की मेड़ पर भी लगा सकते हैं। इसके फल से अपनी आय के स्रोत बढ़ा सकते हैं। यह फल किसान की आय वृद्धि करने में एक निर्णायक भूमिका अदा कर सकता है।



चिरौंजी का पौधा

महत्व

चिरौंजी के प्राकृतिक जंगलों का बचाव तथा वनाश्रित लोगों को जागरूक करके इसका संवर्धन किया जा सकता है। विघटित जंगलों को पूर्वावस्था में लाने के लिए वन विभाग को स्थानीय लोगों के साथ मिलकर इसके संरक्षण हेतु कदम उठाने चाहिए। कुछ प्राकृतिक स्थानों को चिन्हित करके वहां पर चिरौंजी के वनों को विकसित किया जा सकता है। जंगल में आदिवासी समुदाय के लोगों तथा किसानों में चिरौंजी के वृक्ष के बारे में जागरूकता बढ़ाने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, जिससे वे इसके महत्व को समझें और इससे अपनी आजीविका में सुधार ला सकें। चिरौंजी प्रसंस्करण हेतु केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा मशीनरी मुहैया कराई जा सकती है, जिससे इसके प्रसंस्करण में आसानी हो सके और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों में वृद्धि हो सके। किसानों द्वारा एकत्रित बीजों तथा चिरौंजी की खरीद के लिए उपयुक्त बाजार एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य तय किया जा सकता है।

इसकी बागवानी करने से पहले, बेहतर अंकुरण पाने के लिए, इसके बीज को एक कठोर खोल से सावधानी से निकाला जाता है। बीज को लगाने से पहले 24-48 घंटे तक पानी में रखा जाता है। ऐसे रखने से इसकी अंकुरण क्षमता अधिक हो जाती है। बागवानी के लिए चिरौंजी के पौधे को 5-8 मीटर की दूरी पर लगाया जा सकता है। पौधे लगाने से पहले गड्ढे में 10 किलोग्राम गोबर की खाद, 300 ग्राम फॉस्फोरस और 200 ग्राम पोटाश डाल सकते हैं। इसके फूल दिसम्बर-मार्च के समय में आते हैं, फूल आने से पहले 15-20 किलो गोबर की खाद पेड़ के लिए लाभकारी है। चिरौंजी के पौधे खरीफ के मौसम में लगाए जाते हैं तथा सूखे क्षेत्रों में तेज गर्मी में, इसमें सिचाई की आवश्यकता हो सकती है।

फल कटाई का समय

चिरौंजी के बीज को परिपक्व होने में 4-5 महीने लगते हैं। इसके फूल आने का समय फरवरी के पहले सप्ताह से तीसरे सप्ताह तक होता है। चिरौंजी के फल की तुड़ाई अप्रैल-मई में की जाती है। फल पकने के समय में इनका रंग हरे से बैंगनी में बदल जाता है। पके हुए फल मीठे और स्वादिष्ट होते हैं, जिन्हें खाया जाता है। तुड़ाई से प्राप्त



चिरौंजी पेड़ के साथ स्थानीय लोग

चिरौंजी फलों को एक रात के लिए साधारण पानी में भिगोया जाता है और उसके बाद ये धोकर दो-तीन दिन तक धूप में सुखाए जाते हैं। सूखी हुई गुठली से चिरौंजी दाने निकालने के लिए प्रायः पारंपरिक विधि का प्रयोग किया जाता है। इसकी गुठली को ओखली में कूटकर दाने को निकाला जाता है। उन्नत विधि के लिए आधुनिक उपकरणों का विकास किया गया है, जिससे बड़े पैमाने पर प्रसंस्करण करके कम समय में ज्यादा उत्पाद प्राप्त किया जा सके।



चिरौंजीयुक्त व्यंजन

चिरौंजी की खेती से संभावित आमदनी

बागवानी के लिए, 5x5 मीटर की घनता से एक एकड़ में 160 पेड़ लगाए जा सकते हैं। इसमें एक पेड़ से करीब 20 किलोग्राम चिरौंजी गुठली प्राप्त की जा सकती है। इन गुठलियों को 80रु प्रति किलो बेचने पर, जो कि इसका वर्तमान मूल्य है, प्रति एकड़ 2,56,000रु तक की आय प्राप्त की जा सकती है। यदि प्रसंस्करण करके गुठली में से दाना निकाला जाए तो एक पेड़ से 4 किलो चिरौंजी दाने प्राप्त किये जा सकते हैं, जिसको 800रु/किलो के अनुसार बेचने पर, एक एकड़ में 160 पेड़ पर लगभग 5,12,000रु/प्रति एकड़ तक आमदनी प्राप्त की जा सकती है। ■